पूरुरात्रेयः।अग्निः। अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः

आ यज्ञैर्देव मर्त्य इत्था तव्यांसमूतये। अग्निं कृते स्वध्वरे पूरुरीळीतावसे॥ ५.०१७.०१

देव। मर्त्यः- मनुष्यः। इत्था- एवम्। तव्यांसम्- प्रवृद्धम्। त्वाम्। ऊतये- रक्षायै। यज्ञैः- दानैः पूजाभिः सङ्गतिकरणैः। आह्वयति। पूरुः- मनुष्यः। अग्निम्। कृते- रचिते। स्वध्वरे- ध्वरविरोध्युपासने। अवसे- रक्षायै। ईळीत- स्तौति ॥१॥

अस्य हि स्वयशस्तर आसा विधर्मन्मन्यसे।

तं नाकं चित्रशोचिषं मन्द्रं परो मनीषया॥ ५.०१७.०२

विधर्मन्- विशेषधर्मवन्। स्वयशस्तर- शोभनकीर्ते। परः- श्रेष्ठः सन्। मनीषया। आसा- स्वमुखेन। मन्द्रम्- आनन्दकरम्। चित्रशोचिषम्- असाधारणप्रकाशम्। नाकम्- दुःखरहितम्। तम्। मन्यसे- स्तौषि ॥२॥

अस्य वासा उ अर्चिषा य आयुक्त तुजा गिरा।

दिवो न यस्य रेतसा बृहच्छोचन्त्यर्चयः॥ ५.०१७.०३

यः। तुजा- बलेन। गिरा- मन्त्रेण। अयुक्त- योजितः। दिवो न- द्योतमानस्य सूर्यस्येव। यस्य। रेतसा- वीर्येण सर्वं सम्भृतम्। अस्य- तस्याग्नेः। वासा- व्यापकेन। अर्चिषा- प्रकाशेनोपासकः सुवीर्यो भवतीति शेषः। अर्चयः- अग्नेः प्रभाः। बृहत्- महत्यः। शोचन्ति- भासन्ते ॥३॥

अस्य क्रत्वा विचेतसो दस्मस्य वसु रथ आ।

अधा विश्वासु हव्योऽग्निर्विक्षु प्र शस्यते॥ ५.०१७.०४

विचेतसः- विशेषचेतना उपासकाः। अस्य- एतस्य। दस्मस्य- दर्शनीयस्य। क्रत्वा- प्रज्ञया। वसु- सम्पदम्। रथे। आदधाति। अध- अथ। विश्वासु- सर्वासु। विक्षु- प्रजासु। हव्यः- हव्यवाहकः। अग्निः। प्र शस्यते- प्रकर्षेण स्तूयते ॥४॥

नू न इद्धि वार्यमासा सचन्त सूरयः।

ऊर्जो नपादभिष्टये पाहि शग्धि स्वस्तय उतैधि पृत्सु नो वृधे॥ ५.०१७.०५

नु- क्षिप्रम्। नः- अस्मभ्यम्। वार्यं- श्रेष्ठं यच्छ। आसा- स्वमुखोपलक्षितत्वत्स्तुत्या। सूरयः- विद्वांसः। सचन्तः- वार्यं लभन्ते। ऊर्जो नपात्- शक्तिज। अभिष्टये- सदेषणायै। पाहि- नः पालय। शग्धि- याचे। पृत्सु- वृत्रैर्जनिते युद्धे। नः- अस्माकम्। वृधे- वृद्धयै। स्वस्तये- मङ्गळाय। एधि- भव॥५॥